संवाद

शिक्षा मानव समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास करना तथा व्यवहार को परिष्कृत कर एक व्यवस्थित समाज का निर्माण करना है। शिक्षा को पहले से और अधिक बेहतर और सुगम बनाने के लिए विद्यालयों एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधार किए गए। इन्हीं सुधारों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया गया है।

प्रस्तुत अंक में कुल बारह लेख, एक कविता, बालमन तथा विशेष शामिल हैं, जिनमें से तीन लेख 'प्राथमिक शिक्षकों के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षण की विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ', 'कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन पूर्व प्राथमिक शिक्षा अपेक्षाएँ, चुनौतियाँ और समाधान' तथा 'कोविड-19 काल के दौरान ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थियों के ऑनलाइन आकलन(असेसमेंट) में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन' ऑनलाइन शिक्षण से संबंधित हैं। कोरोना काल में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के समक्ष कई चुनौतियाँ आईं, जैसे— खराब नेटवर्क, स्मार्टफोन की कमी, घरेलु वातावरण, तकनीकी सहायता में कमी, विशिष्ट ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ऑनलाइन शिक्षण सामग्री का अभाव आदि परंतु शिक्षा जारी रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने नया शैक्षिक ढाँचा बताया है जिससे बुनियादी शिक्षा में सुधार होने की संभावना है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में बुनियादी शिक्षा का बहुत महत्व है। अतः पठन, लेखन और गणित कौशल के साथ-साथ स्वास्थ्य, भोजन, शिक्षा, खेल-कूद आदि के लिए भी सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता होती है। 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा लक्ष्य, चुनौतियाँ और अवसर' लेख, इन्हीं मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में चर्चा करता है।

शिक्षा-संप्रेषण में भाषा की अहम भूमिका है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी पृष्ठभूमि से आते हैं इसलिए विद्यालयी पाठ्यक्रमों में निर्धारित विषयों के अंतर्गत मुख्य भाषायी आयामों को कक्षा शिक्षण व्यवहार में अपनाकर विद्यार्थियों की सहज व सशक्त अभिव्यक्ति को विकसित करने में शिक्षक अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर भाषा के विविध आयामों के विश्लेषण एवं उपयोग को समझने और हिंदी भाषा सीखने में 'विद्यालयों में पाठ्यक्रम संपादन हेतु भाषायी आयामों का चिह्नीकरण, विश्लेषण एवं उपयोग', 'प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल' आदि लेख महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विद्यार्थियों में बौद्धिक ज्ञान के अतिरिक्त उनके बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के विकास में सहायक सुबह की प्रार्थना सभा बच्चों के मन तथा शरीर को प्रभावित करती है साथ ही उनमें नैतिक मूल्यों का

विकास करती है, जिसका उल्लेख 'अरुणाचल प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में सुबह की सभा— एक अध्ययन' लेख में किया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के जीवन-कौशल का विकास भी विद्यालयों का लक्ष्य है जिसे 'मनन-सत्र द्वारा जीवन कौशलों का संवर्धन' लेख में समझाया गया है।

प्रारंभिक शिक्षा के विकास में खिलौनों का योगदान अहम रहा है। खिलौनों से बच्चे खेल-खेल में संख्या-ज्ञान, अक्षर-ज्ञान, रंग, जाँचना-परखना, आपस में बातचीत, भाषा कौशल आदि आसानी से सीखते हैं। 'प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मकता को एकीकृत करने वाले आधार वर्षों के लिए खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र' लेख इसी विकासात्मक ज्ञान पर आधारित है।

प्राथमिक स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सुधार के लिए सरकार द्वारा 'निपुण भारत मिशन' को एफ.एल.एन. को सफल बनाने हेतु क्रियान्वित किया गया। जिसका उद्देश्य आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशलों को छात्रों के अंतर्गत विकसित करना है। 'निपुण भारत मिशन— संभावनाएं एवं चुनौतियाँ' लेख में इस योजना के उद्देश्य, उसके भविष्य एवं चुनौतियों को समझाया गया है।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम' गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर आधारित लेख है। शिक्षा की वृहद संकल्पना उसे सृजन से जोड़ती है। 'शिक्षा, शिक्षण और सृजन के क्षण' जैसे लेख बताते हैं कि सृजन में अनिवार्य रूप से लोक कल्याणकारी प्रवृत्ति सम्मिलित होती है।

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'विज्ञान शिक्षणशास्त्र (उच्च प्राथमिक स्तर)' को शामिल किया गया है, ताकि आप इसे पढ़कर इससे लाभांवित हों।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि आपके पास पत्रिका के संबंध में कोई सुझाव हो तो हमें अवश्य भेंजे। हम अपने आगामी अंक में उन्हें समाहित करने की कोशिश करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक